 ISSN: 2582-6530

आईनाम इरिंग की चार कविताएं

(1)
उस रोज

जब यह रात बीत जाएगी,
उस रोज सूर्योदय से पहले उठूंगी
और सब से मिलने निकल जाऊंगी।

बाजार के बीच बहती नदी के पास बैठूंगी
बाजार ने जिसे नाला बनाकर छोड़ दिया है।
क्षितिज के ओट से जब सूरज निकलेगा
जलते हुए आग के गोले के पीछे छुपे
सूरज की सूरत को देखूंगी।

दोपहर को शहर के बीच अकेली खड़ी
पीपल के उस पेड़ से भी मिलने जाऊंगी
उसकी बाहों से लिपट जाऊंगी।
हवा जिसे कभी किसी ने नहीं देखा है
पत्तों से खूबसूरती के किस्से सुनूंगी।

शाम को घर लौटकर आईना देखूंगी
उस ओर खड़ी प्रकृति को देखूंगी
जिसे अधिक मनुष्य बनकर उस रोज उठना होगा
अधिक करूणामय हृदय लिये जागना होगा।

(2)

कैसे हो?

जब कोई हाल पूछता है
तब सच बताना कितना मुश्किल होता है।
'मुश्किल'
यही तो है वह जेब
जो रहने देता है सारे जवाबों को।
हम यूं ही कह देते हैं
'सब ठीक है'
और सवाल की गंभीरता,
एक हिचकी में टल जाती है
क्योंकि यह सवाल बहुत गहरा है
इतना कि लोग डूब जाएँ
उसके अंतस में।

इसलिए बचने-बचाने के लिए
हर बार कह देती हूँ
'सब ठीक है।'

(3)

अकेला होना

शहर में
घर में
और एक कमरे में
अकेले रहना
अकेला होना नहीं है मीत
जब तक कि दूर पहाड़ी के उस पार
कोई तुम्हें भी याद करता हो
सुबह, दोपहर और शाम।

(4)

टाँके लगा लेती हूँ

मेरी दो जूतियाँ
दोनों की गहरी दोस्ती
आज एक टूट गयी
और टाँके लग गये।

मुझे ख़याल आया कि
कई बार मैं भी टूट जाती हूँ
हर बार टाँके लगा लेती हूँ।
बल्कि सब टूटते हैं
अपनी-अपनी राहों में
सब टाँके लगवा लेते हैं
बची हुई जूती के खातिर
ताकि दूसरे का बचना बचा रहे
और जब दूसरा टूट जाये
तब उसके पास भी तो बचा रहे,
टाँके लगवाने का कोई एक कारण।

***(लेखकीय परिचय:** आईनाम इरिंग अरुणाचल प्रदेश के अपर सियाङ जिले में स्थित शासकीय मॉडल कॉलेज गेकू में हिंदी की सहायक प्रोफेसर हैं।)*

***